International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(1): 92-93

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(1): 92-93
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 28-11-2019
Accepted: 30-12-2019

डॉ. अर्चना पाल
एसोसिएट प्रोफेसर, आर0सी0ए0 गर्ल्स (पी0जी0) कॉलेज, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. अर्चना पाल
एसोसिएट प्रोफेसर, आर0सी0ए0 गर्ल्स (पी0जी0) कॉलेज, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

संस्कृत के कतिपय शब्दों का हिन्दी में विभिन्न अर्थों में प्रयोग

डॉ. अर्चना पाल

सारांश
संस्कृत भाषा के तत्सम शब्द हिन्दी में पर्याप्त संख्या में प्रचलित है। इनमें से कुछ शब्द तो हिन्दी भाषा के विकास के विभिन्न कालों में प्रयुक्त होते रहे हैं। कबीरदास, तुलसीदास, जायसी, सूरदास, केशवदास, बिहारी आदि की रचनाओं में संस्कृत भाषा के शब्द प्रचुर संख्या में हैं। कुछ संस्कृत शब्द ऐसे है जिनके अर्थ हिन्दी में संस्कृत में पाये जाने वाले अर्थों से पर्याप्त भिन्न हैं अथवा सर्वथा भिन्न हैं। भाषा विज्ञान की दृष्टि से ऐसे शब्दों के अर्थ भेद के अध्ययन से इन संस्कृत शब्दों का अर्थ करने में जो भ्रान्ति बनी रहती है वह दूर होती है। बहुधा संस्कृत ग्रन्थों में आये शब्दों का भ्रान्तिवश वही अर्थ कर दिया जाता है जो आजकल हिन्दी में है।

कूटशब्दः अकाल, चिरन्जीव, पदवी, वैमनस्य, व्यक्ति

प्रस्तावना
अर्थ विकास प्रक्रिया का अध्ययन करने की दृष्टि से यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि हम संस्कृत में प्रयुक्त शब्दों का वर्तमान में हिन्दी में परिवर्तित अर्थ को समझें। यहाँ कुछ ऐसे संस्कृत शब्दों को लिया गया है जिनके अर्थ हिन्दी में परिवर्तित हो गये है।

अकाल
आजकल हिन्दी में ''अकाल'' शब्द अधिकतर ''दुर्भिक्ष'' अर्थ में प्रचलित है। ''अकाल का यह अर्थ संस्कृत में नहीं पाया जाता है।
संस्कृत में ''अकाल'' पुं0 शब्द का अर्थ है – ''असमय, अनवसर''। कालिदास ने ''अकाल'' शब्द को प्रयोग इस अर्थ में अपनी कृतियों में अनेक स्थलों पर किया है।

अकालसन्ध्यामिव धातुमत्ताम्। कुमार 0।.4
अत्यारूढो हि नारीणामकालज्ञो मनोभवः। रघु0 12.33
न ह्यकालभवो मृत्युरिक्ष्वाकुपदमस्पृशत्। रघु0 15.44
कोटरमकालवृष्ट्या प्रबलपुरोवातया गमिते। मालवि0 4.2

''अकाल शब्द का मूल अर्थ ''असमय, अनवसर'', होने के कारण इसका प्रयोग बुरा समय, कुसमय'', ''अनुपयुक्त समय'', ''अशुभ समय'' आदि के लिये भी होने लगा और कालान्तर में इसका प्रयोग एक विशेष प्रकार के बुरे समय अर्थात् ''दुर्भिक्ष'' के लिये किया जाने लगा। ''दुर्भिक्ष'' ऐसे समय को कहते हैं, जबकि लोगों को खाने के लिए अन्न बड़ी कठिनता से मिले। ऐसे समय में बहुत से निर्धन, जो खाद्य पदार्थ नहीं प्राप्त कर पाते, मर जाते हैं। ऐसा समय अर्थात् दुर्भिक्ष का समय अत्यन्त बुरा होता है। ''अकाल'' शब्द आजकल अधिकतर इसी अर्थ में व्यवहृत होता है। इस प्रकार ''अकाल'' शब्द जो पहिले सामान्य रूप में ''असमय'' या ''बुरा समय'' को लक्षित करता था, कालान्तर में विशेष प्रकार के बुरे समय अर्थात् ''दुर्भिक्ष'' के लिये प्रचलित हो गया। बहुधा ''अकालमृत्यु'' आदि में इसका अर्थ ''असामयिक'' भी समझ लिया जाता है।

चिरन्जीव
हिन्दी में ''चिरन्जीव'' शब्द अधिकतर पुत्र आदि अथवा पुत्र–तुल्य छोटों के नाम के साथ आशीर्वादात्मक वि0 के रूप में ''दीर्घजीवी'' अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। कभी कभी छोटों को आशीर्वाद देते हुए अव्यय के रूप में भी 'चिरन्जीव'' कह दिया जाता है।

किन्तु संस्कृत में ''चिरन्जीव'' एक शब्द नहीं है, अपित एक वाक्य है – ''चिरम्''+''जीव'' ''चिरम्'' का अर्थ है – ''चिर–काल अर्थात् दीर्घकाल तक'' और ''जीव'' का अर्थ है – ''जीओ'' ''जीव'' ''जीना'' अर्थ वाली ''जीव्'' धातु का मध्यम पुरूष एकवचन का रूप हैं।

कालिदास ने अभिज्ञानशकुन्तलम् में 'चिरं जीव'' इस वाक्य का प्रयोग किया है। मारीच ऋषि दुष्यन्त को आशीर्वाद देते हुए कहते हैं –

वत्स, चिरं जीव। पृथ्वी पालय। शाकु0 7–27 के पश्चात् यह एक रोचक तथ्य है कि संस्कृत का ''चिरं जीव'' वाक्य हिन्दी में आकर केवल आशीर्वादात्मक विशेषण अथवा अव्यय बन गया है।

पदवी

आजकल हिन्दी में ''पदवी'' स्त्री0 शब्द ''शासन अथवा किसी संस्था की ओर से दी जाने वाली सम्मान अथवा योग्यता की सूचक उपाधि'' के लिये प्रयुक्त किया जाता है। संस्कृत में ''पदवी'' स्त्री0 शब्द का अर्थ नहीं मिलता। संस्कृत में ''पदवी'' शब्द के अर्थ हैं – ''मार्ग'' ''आचरण–मार्ग'', ''अवस्था'' आदि। कालिदास ने अपनी कृतियों में ''पदवी'' शब्द का प्रयोग ''मार्ग'' और ''आचरण–मार्ग'' अर्थों में किया है।

''मार्ग''

श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितको जहाति सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवी मृगस्ते। शाकु0 4.14
अलक्तकाङ्कां पदवी ततान। रघु0 7.7
जगृहुस्तस्य चित्तज्ञाः पदवी हरिराक्षसाः । रघु0 15.99
त्वामारूढं पवनपदवीमुद्गृहीतालकान्ताः। मेघ0 1.8

''आचरण–मार्ग''

अलं प्रयत्नेन तवात्र मा विधाः पदं पदव्यां सगरस्य सन्ततेः। रघु0 3.50
पदवी तरूवल्कवाससां प्रयताः संयमिनां प्रपेदिरे। रघु0 8.11

पैरों से अथवा वाहन आदि से जिस पर चला जाता है उस मार्ग के सादृश्य से आचरण अथवा व्यवहार के मार्ग को भी आलङ्कारिक रूप में ''मार्ग'' के वाचक ''पदवी'' शब्द द्वारा लक्षित किया जाने लगा।

वैमनस्य

आजकल हिन्दी में ''वैमनस्य'' शब्द ''वैर'' ''द्वेष'' मनमुटाव'' आदि अर्थों में प्रचलित है। संस्कृत में ''वैमनस्य'' नपु0 शब्द का अर्थ है, ''मनसन्ताप'' मनोव्याकुलता विमनसो भावः वैमनस्यम् – विमनस श्यञ।

कालिदास ने ''वैमनस्य'' शब्द का ''मनःसन्ताप'' अर्थ में ही प्रयोग किया है।
अस्मात् प्रभवतो वैमनस्यादुत्सवः प्रव्याख्यातः । शकु 6.5 के पश्चात्

''वैमनस्य'' शब्द ''दूसरों के प्रति वैरभाव'' अर्थ में मराठी और कन्नड़ भाषाओं में भी प्रचलित है। कुछ लोग मानते है कि ''वैरभाव'' अर्थ में ''वैमनस्य'' शब्द हिन्दी में मराठी से आया है।

व्यक्ति

आजकल हिन्दी में ''व्यक्ति'' शब्द ''मनुष्य, आदमी' अर्थ में प्रचलित है और पुं0 में प्रयुक्त होता है। संस्कृत में यह स्त्री0 शब्द है। हिन्दी में ''व्यक्ति'' शब्द सामान्यतयाः पुरूष और स्त्री दोनों के लिये प्रयुक्त होता है।

संस्कृत में ''वि'' उपसर्ग–पूर्वक ''अन्ज्'' धातु में ''क्तिन्'' प्रत्यय लगकर बने व्यक्ति स्त्री0 शब्द का मूल अर्थ है – ''प्रकटीकरण, प्रकटता''। इससे ''व्यक्ति शब्द के ''स्पष्टता'' ''भेद'', ''वास्तविक रूप'', ''एक इकाई जाति के विपरीत आदि अर्थ विकसित हुए है। कालिदास ने ''व्यक्ति'' शब्द का प्रयोग अधिकतर ''प्रकटीकरण'' प्रकटता अर्थ में किया है –

राज्ञ : समक्षमेवाधरोत्तरव्यक्तिभविष्यति।
स्नेहव्यक्तिश्चिरविरहजं मुन्चतो बाध्यमुष्णम्।
सन्तनिस्तनुभावनष्टसलिला व्यक्तिं भजन्त्यापमाः। साकु0 7–8

रघुवंश में कालिदास ने ''व्यक्ति'' शब्द का प्रयोग ''भेद'' अर्थ में भी किया है –

तं सन्तः श्रोतुमर्हन्ति सदसद्व्यक्तिहेतवः रघु 0 1.10

सम्भवतः ''व्यक्ति'' शब्द के ''एक इकाई (जाति के विपरीत)'' अर्थ से ''मनुष्य, आदमी'' अर्थ विकसित हुआ है। ''निजी'' अर्थ में ''व्यक्तिगत'' शब्द प्रयुक्त होता है, जिसमें इकाई होने का भाव निहित है।

निष्कर्ष

हिन्दी भाषा के प्रयोक्ताओं के द्वारा संस्कृत भाषा के शब्दों के हिन्दी में अर्थों की परिवर्तनशीलता का अध्ययन रोचक होने के साथ ही साथ भाषा के प्रवाह को समझने में दिशा प्रदान करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अभिज्ञान शाकुन्तमलम् – डॉ. कपिल देव द्विवेदी पंचम संस्करण, रामनारायण लाल बेनीमाधव, इलाहाबाद, 1969।
2. मालविकाग्निमित्रम् –सं0 तारिणीश झा, प्रथम संस्करण, 1964 रामनारायण लाल बेनीमाधव, इलाहाबाद।
3. रघुवंशम् – व्याख्याकार डॉ. श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, तृतीय संस्करण, 1983, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
4. डॉ. कर्ण सिंह – भाषा विज्ञान, साहित्य भण्डार, मेरठ।
5. डॉ. केशवराम पाल – ''हिन्दी में प्रयुक्त संस्कृत शब्दों में अर्थ परिवर्तन ''प्रथम संस्करण, 1964, प्राची प्रकाशन, मेरठ।